



डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में बौद्ध चिंतन का प्रभाव - एक अध्ययन

अशोक कुमार त्यागी¹ डॉ. सीमा शर्मा²

1- अशोक कुमार त्यागी, शोधार्थी, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

ईमेल - ashoktyagi.nagina@gmail.com

2. डॉ. सीमा शर्मा, शोध-निर्देशक, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, ईमेल -

sseema561@gmail.com

How to Cite this Article:

Tyagi, A. K. (2026) डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में बौद्ध चिंतन का प्रभाव . एक अध्ययन
पुनर्मुद्रित Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management, <i>02</i>(10), 1-9.
<https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i10.113>

License:

This article is published under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and the source are credited.

© The Author(s). Published by International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management.



<https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i10.113>

सार संक्षेपण

डॉ. अतुल कृष्ण की साहित्य-साधना समाज सुधार की भूमिका पर आधारित है। वे समाज में फैले मानवकृत वैषम्य तथा अनाचार को लक्षित करते हैं, और उसको समाप्त करने के लिए भारतीय आध्यात्मिक मूल्यों को अपना संसाधन बनाते हैं। वे सामान्य जन को राष्ट्र मानव मूल्यों तथा समाज-मंगल के लिए स्तुत्य कार्य करते हैं। इसके लिए वे तथागत बुद्ध के आदर्शों से मानवीय संवेदनाओं को विकसित करने का साहित्यिक प्रयास करते हैं। उनका ध्येय यही है कि व्यक्ति की मनोवृत्ति को परिष्कृत करने और समाज की ओर उन्मुख करने की भी दिशा प्रदान किया जाए। वैसे तथागत बुद्ध के आदर्शों पर चलने का दावा दलित साहित्यकार भी करते हैं, लेकिन उस साहित्य में वंचित समाज की पीड़ा का यथार्थवादी प्रकटीकरण तो हैं लेकिन अन्य समाज के प्रति कुंठा और विद्रोही भाव भी है जो वैषम्य के स्तर तक पहुंच जाता है। पर, डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में ऐसा नहीं है। उनके साहित्य में अहिंसा परमो धर्म की अवधारणा के व्यावहारिक पक्ष को स्थान दिया गया है और प्रकृति और प्रत्येक जीवन की रक्षा, और नैतिकता पर विशेष बल दिया गया। उनका साहित्य कहीं भी टकराव का साहित्य नहीं है, वह समन्वय का साहित्य है। बौद्ध मत ने उनके साहित्य को समानता, करुणा और नैतिक मूल्यों से समृद्ध किया, जो मानवतावादी सोच को बढ़ावा देते हैं। बुद्ध के दर्शन का सम्यक अध्ययन मूलतः आत्ममुक्ति की उद्घोष का है। आलोच्य साहित्यकार के समग्र साहित्य में यही भाव व्यापकता से सक्रिय हैं।

शब्द कुंजी- आत्मग्रही, संवेदनात्मक संबंध, परार्थ, लोक-मंगल, आध्यात्मिक चेतना, मध्य-मार्ग

डॉ. अतुल कृष्ण केवल एक साहित्यकार ही नहीं है, उनका जीवन बहुआयामी है। वे कुशल तथा भावुक लेखक होने के साथ समाज-सुधारक की भूमिका में भी है। उनका ध्येय एक विकसित, शिक्षित, उन्नत और उदार समाज की स्थापना है। अतः उन्होंने भारतीय दर्शन के आधार पर भारतीय समाज के परिमार्जन का वैचारिक प्रयास किया है। वैदिक दर्शन के अतिरिक्त उन्होंने अवैदिक दर्शनों को भी सम्मान दिया है। शाक्य मुनि तथागत बुद्ध का दर्शन मानव को आत्मग्रही दृष्टि और आत्मकेंद्रितता से मुक्त कर, उसे परमार्थ के लिए प्रेरित करता है जो वर्तमान भौतिकतावादी परिवेश के लिए आवश्यक है।

डॉ. अतुल कृष्ण का वैचारिक-आयाम सर्व-समाज की मंगलाकांक्षा है। यही भाव उनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं। वे तथागत के उस सिद्धांत से प्रभावित हैं कि व्यक्ति को अपने भीतर की यात्रा करनी चाहिए, ध्यान, योग तथा विपश्यना बौद्ध मत में भीतर की यात्रा के उपकरण हैं। डॉ. अतुल कृष्ण मानते हैं कि जब व्यक्ति भीतर का पथिक हो जाता है तो उसमें चामत्कारिक परिवर्तन आते हैं। वे लिखते हैं कि हमारे भीतर कुंठाएं हैं, पूर्वाग्रह हैं, निराशा है, और प्रकृति द्वारा प्रदत्त मूल्यवान जीवन में भी नकारात्मक सोच है। पर, जब हम अंतर्जगत के पथिक बन जाते हैं, तो उन सब तटबंधों को पार कर उस भाव लोक में विचरण करते हैं, जहां अपार



आनन्द है, किसी के प्रति दुराग्रह नहीं है, असीमित आशाएं हैं, और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि है। इस नाते ही डॉ. अतुल कृष्ण विपश्यना से भी आगे सुपश्यना की बात करते हैं। वे कहते हैं कि जब किसी पीड़ित के दुख के भाव आपको अपने लगने लगे, प्रत्येक की वेदना में स्वानुभूति होने लगे, तब समझना कि तथागत की करुणा आपके भीतर जाग्रत हो गई है और यही स्थिति सुपश्यना की है। वर्तमान समय में मानव व्यवहार तथा चिंतन में यांत्रिक होता जा रहा है। संवेदनाएं कहीं न कहीं शून्य हो रही हैं। इस स्थिति में, मानव का व्यवहार अति आत्मकेंद्रित होता है, उसमें प्रदर्शन की भावना भी होती है। व्यक्ति भौतिकवाद की ओर आकर्षित होता है और अपना जीवन उपयोगितावाद के सिद्धांत द्वारा संचालित करता है। यह विलासता तथा भोग की अतिरेक की स्थिति है। इस स्थिति में व्यक्ति केवल स्वहित का चिंतन करता है। वह मोह के जाल में फंसा हुआ है। तथागत ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं कि वे नितांत अज्ञानी हैं, जब यह शरीर ही हमारा नहीं है तो कैसे हम कहते हैं कि यह पुत्र मेरा है, वह सम्पदा मेरी है। धर्म पद में बाल वर्ग में तथागत ने कहा है कि -

पुत्ता मत्थि, धनम्मत्थि इति बालो विहन्नति,

अत्ता हि अत्तनो नत्थि, कुत्तो पुत्तो कुतो धनं ।।

यानि मेरा पुत्र है, मेरा धन है, ऐसा सोचकर अज्ञानी जन परेशान होते हैं। जब स्वयं अपना नहीं है, तो पुत्र कहां, धन कहां। डॉ. अतुल कृष्ण ने इसी भाव को अपने जीवन का ध्येय बनाया। वे सदा मोह तथा अतिशय आसक्ति से दूर रहे। उनके लिए पूरा समाज ही उनका परिवार था। यह भाव बाल-काल से ही उनके भीतर थे। श्री सरदार अहमद द्वारा सम्पादित उनके अभिनंदन ग्रंथ में उनकी माताजी का स्मरण भी है। वे लिखती हैं कि जब वे युवा थे, एक बार अपना कोट किसी निर्धन व्यक्ति को दे आए थे, शीतकाल में उसके पास उचित वस्त्र नहीं थे। यह तथागत का अपरिग्रह सिद्धांत है जो व्यक्ति को न्यूनतम आवश्यकता के लिए प्रेरित करता है और अतिरिक्त वस्तु को उसको देने का निर्देश देता है जो अभावग्रस्त हो, और उसको उस वस्तु की आवश्यकता हो। डॉ. अतुल कृष्ण का मानना है कि कोई भी व्यक्ति अपनी योजना, परिश्रम तथा विवेक से अथाह सम्पदा एकत्र कर सकता है, नव सृजन कर सकता है, लेकिन न्यासी की भावना से। वे लिखते हैं कि मानव कल्याण के लिए वस्तुओं का संग्रह किया जा सकता है। लेकिन अधिकारात्मक भाव से नहीं, हम एक न्यासी की भूमिका में हो, हमारे विकास से लोक कल्याण भी हो, अनेक लोगों को हमारे द्वारा आजीविका प्रदान की जाए, यही अपरिग्रह है। डॉ. अतुल कृष्ण के व्यावहारिक जीवन में भी अपरिग्रह के यही भाव स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। वे अति सादा और सामान्य जीवन देते हैं, अथाह परिश्रम करते हैं, और उन लोगों के लिए भी रोजगार सृजित करते हैं जो दिव्यांग हैं या किसी कारण से आर्थिक परेशानी से पीड़ित हैं। उनके संस्थान मानव सेवा का विराट केंद्र भी हैं।

समाज में ऐसे लोग भी होते हैं जो अति नकारात्मक सोच रखते हैं, उनके लिए यह जगत निरर्थक है। इस भाव को लेकर वे कर्महीनता का षिकार हो जाते हैं। उनकी दृष्टि में यह जगत अनुपयोगी और निरर्थक है। उनके लिए यह जगत माया है, वे इस माया से मुक्त होना चाहते हैं। जबकि तथागत ऐसा नहीं मानते। वे कहते हैं कि सृष्टि की सभी वस्तुएं कार्य-कारण के नियम से संचालित होती हैं। इस दृष्टि में किसी की भी स्वतंत्र और शाश्वत सत्ता नहीं है। सभी एक दूसरे पर निर्भर हैं, यह सब पटिच्च समुत्पाद के नियम से बंधा है। इससे सिद्ध है कि इस जगत की प्रत्येक गतिविधि मानव जीवन को चलाने में सहायक है। व्यक्ति को अपना कर्म अवश्य करना चाहिए। यह जगत निरर्थक नहीं है, एक निश्चित व्यवस्था है जिसके भीतर असंख्य जीवन का संचालन होता है। डॉ. अतुल कृष्ण के कथा संग्रह आधारशिला की कहानी नारी की नायिक तथागत के कार्य-कारण सिद्धांत से प्रभावित प्रतीत होती है। वर्णित नायिका प्रतिभा के सामने ऐसा संकट आ जाता है कि उसने जीवन का सम्पूर्ण रस ही समाप्त होता प्रतीत होता है, उसके प्रेमी को एड्स का घातक रोग हो जाता है। लेकिन नायिका न तो विचलित होती है और न ही अपने प्रेमी के मन में किसी प्रकार की हीनता पैदा करना चाहती है, अपितु एक महान संकल्प लेती है कि वह अपने प्रेमी से विवाह अवश्य करेगी और फिर चिकित्सालय खोलेगी, जिसमें एड्स पीड़ितों को जीवन जीने का नवीन अवसर प्रदान किया जाएगा।

इस प्रसंग में तथागत के इस आदर्श का प्रतिपादन किया गया है कि त्यागमय जीवन के माध्यम से लोकमंगल के कार्य करो। हम देखते हैं कि समाज का संचालन दो प्रकार की प्रवृत्तियां कर रही हैं, एक संसार के मोह में है और दूसरी निर्माही होकर जीवन तथा जगत की सार्थकता को ही अस्वीकार कर रही है। इस दोनों अति की परिस्थितियों में तथागत मध्यम मार्ग का आविष्कार करते हैं। वे इसके लिए अष्टांगिक मार्ग का उपदेश देते हैं। व्यक्ति सम्यक दृष्टि, वाणी, संकल्प, कर्म, वाक, आजीविका, व्यायाम, स्मृति और समाधि का पालन करता है तो वह किसी भी प्रकार की अति से सुरक्षित रहता है। अष्टांगिक मार्ग के निहितार्थ को डॉ. अतुल कृष्ण अपने आलेख में लिखते हैं कि जब व्यक्ति कामना आधारित कर्म करता है तो वह स्वार्थी तथा पापलिप्त हो जाता है और उसके भीतर अनेक प्रकार के विकार जैसे निराशा, भय, असुरक्षा तथा आत्मघाती सोच का विकास हो जाता है। तथागत इस स्थिति को



आंतरिक क्लेश कहते हैं। गीता के अनुसार कर्मफल में आसक्ति न होने पर कर्म को अपना पवित्र दायित्व समझते हुए करने पर परब्रह्म प्राप्ति होती है। तथागत इस प्रकार का कोई आश्वासन नहीं देते हैं लेकिन कहते हैं कि काय और वचन से उत्पन्न कर्म हमारी चेतना से प्रेरित होकर कुशल या अकुशल कर्म हो जाते हैं। यदि हम पूर्ण स्थिर भाव से कुशल कर्म करते हैं तो हम निर्वाण के अधिकारी हो जाते हैं। मानव कर्म करें, लेकिन पावन तथा लोकहितकारी।

तथागत बुद्ध के जीवन का एक प्रसंग है, जिसमें तथागत बुद्ध तथा आलवक यक्ष के मध्य संवाद होता है। यह संवाद मानव जीवन की सार्थकता के लिए अति अनिवार्य है। डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में इस संवाद का निहितार्थ मुख्य रूप से दिखाई देता है। इस संवाद में व्यक्ति के समाज के साथ संबंधों की व्याख्या की गई है, साथ ही आत्म-केंद्रित जीवन से मुक्त होकर सामूहिक विकास तथा हित के लिए कार्य करने के लिए तथागत प्रेरित करते हैं। इस संवाद में आलवक यक्ष तथागत से प्रश्न करता है कि इस जगत में कौन साधन, रस तथा जीवन श्रेष्ठ है। इस पर तथागत कहते हैं कि-

सद्धीध वित पुरिसस्स सेट्ठ,

धमो सुचिण्णो सुखमाहाति।

सच्चं हवे साधुतरं रसानं,

पाजिवीं जीवितमाहु सेट्ठन्ति।

यानि इस संसार में श्रद्धा धन ही श्रेष्ठ है। भली प्रकार के अभ्यास किया हुआ धम्म सुखदायक होता है। सत्य सभी रसों से स्वादिष्टतर है। प्रज्ञाजीवी का जीवन श्रेष्ठ है। डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में श्रद्धा, धम्म, सत्य और प्रज्ञा के स्वर चारों ओर गुंजित होते हैं। उनके कहानी संग्रह उन्नति के पथ पर आठ कहानियां संग्रहित हैं। सभी कहानियों में कहीं न कहीं श्रद्धा, धर्म और प्रज्ञा मुखर होती है। पहली कहानी केले का छिलका में लोक दायित्वों के प्रति श्रद्धा भाव को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। सबसे बड़ा भक्त कहानी में कर्तव्यनिष्ठा यानी धर्म को सम्मानित किया गया है। शह और मात कहानी में सत्य का निरूपण है। मातृभूमि कहानी पाठक को इस प्रज्ञा से जोड़ती है जिसमें देश के सम्मान की चिंता होती है और परिश्रम पर गर्व का अनुभव होता है। ऐसा लगता है कि कहानीकार ने तथागत के सभी आदर्शों को समन्वित रूप कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

प्रत्यक्षतः डॉ. अतुल कृष्ण का समग्र साहित्य बौद्ध धर्म-दर्शन का भावनात्मक तथा वैचारिक प्रतिनिधित्व करता है। उनका पलायन उपन्यास जातिवाद के अमानवीय चेहरे को अप्रकट करता है, साथ वंचित समाज के उस आक्रोश को भी वाणी देता है जिसको वह अपनी धार्मिक अस्मिता से विद्रोह कर अभिव्यक्त करता है। लेखक वर्णित उपन्यास में वंचित वर्ग के मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न को बहुत ही प्रभावी तरीके से प्रस्तुत है, पाठक को सोचने के लिए विवश करता है कि एक मानव दूसरे मानव से पशुसम व्यवहार कैसे कर सकता है। इस उपन्यास का एक प्रमुख पात्र जो चिकित्सक है, वह समाज की इस विकृति से बहुत दुखी है। वह स्वयं को बौद्ध धर्म का अनुयायी तो नहीं कहता, लेकिन तथागत के आदर्शों को समाज में स्थापित करना चाहता है। वह धर्मांतरण के खतरे को समझता है, साथ ही समाज के उस यथार्थ को भी जानता है जो अपने ही बंधुओं को उपेक्षित मानता है। वह यह भी सिद्ध करने का प्रयास करता है कि भारतीय संस्कृति में भेदभाव नहीं है। तथागत मानव को मतवाद, जातिवाद तथा श्रेणीवाद की संकीर्णताओं से मुक्त कर सामूहिक हित-चिंतना का संदेश देते हैं, यही पलायन उपन्यास का सार-तत्व है। बौद्ध दर्शन से डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य को एक नई गति मिली है। बुद्ध के दर्शन का सम्यक अध्ययन जीवन-दर्शन मूलतः आत्ममुक्ति के उदघोष का है, यही भाव लेखक के साहित्य में परिलक्षित होते हैं।

डॉ. अतुल कृष्ण की महत्वपूर्ण कृति राष्ट्र-अनुभूति बौद्ध जीवन शैली, आत्मिक भाव तथा विचारों का व्यावहारिक प्रकटीकरण है। इस पुस्तक में आरम्भ से अंत पर बौद्ध दर्शन के करुणा, मैत्री, मुदिता, उच्च चरित्र, अनुशासन, सामाजिक दायित्व भावना तथा सामाजिक सौहार्द का संदेश है। लेखक की अभिलाषा है कि युवा पीढ़ी अपने प्रति दायित्वपूर्ण व्यवहार करते हुए समाज के विकास तथा एकता में सहायक हो। वे इस पुस्तक में तथागत के महान आदर्शों को भी स्थान देते हैं, ताकि हमारी युवा पीढ़ी तथागत के सात्विक विचारों को आत्मसात कर उनके अनुकूल व्यवहार कर सके। तथागत कहते हैं कि जो पुण्य चाहते हैं और इसके लिए वर्ष भर यज्ञ और हवन करते हैं, यदि वह व्यक्ति केवल अन्य व्यक्ति को सम्मान दे, उनके साथ सहयोगात्मक व्यवहार करे, तो उसका फल यज्ञ से चार गुणा होता है। तथागत यह मानते हैं कि जगत में विनम्रता और दूसरों का सम्मान ऐसा आचरण है जो व्यक्ति को किसी भी दोष से दूर रख सकता है। दूसरों को सम्मान देने का अर्थ उसके जीवन का सम्मान भी है। इस भाव को डॉ. अतुल कृष्ण के



जीवन में अनेक बार देख सकते हैं। यह उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। सन 1987 में मेरठ साम्प्रदायिकता की आग की जल रहा था। उपद्रवी शोध लक्षित साहित्यकार के चिकित्सालय पर इस उद्देश्य से आक्रमण करने के लिए आतुर थे क्योंकि वे प्रतिधर्मी रोगियों को मारना चाहते थे। उस समय तथागत बुद्ध का यह आदर्श कि न्याय के लिए सर्वस्व त्याग के लिए तैयार रहो। इस भाव को स्वीकार करते हुए वह स्वयं उग्र भीड़ के समक्ष आ गए, जहां उनके प्राणों का भी संकट था। अपनी आत्मकथा जीवन तरंगिणी के दूसरे भाग में वे स्वयं लिखते हैं कि एक चिकित्सक के नाते मेरा धर्म रोगियों की प्राण रक्षा करना था, जिसके लिए मैं प्रत्येक संकट का सामना करने के लिए तत्पर था। उस समय मैं स्थित प्रज्ञ की स्थिति में आ चुका था, मेरे समक्ष केवल मेरा चिकित्सीय धर्म था, मुझे उसकी ही रक्षा करनी थी। डॉ. अतुल कृष्ण का यह कथन उनके जीवन का ध्येय वाक्य है। सेवा से एकता अभियान भी उसी सात्विक भावना को स्पष्ट करता है जो अपने रोगियों को उपद्रवियों से सुरक्षित बचाने के लिए जान पर खेलने के लिए प्रेरित करती है।

तथागत उस व्यक्ति के जीवन को सार्थक मानते हैं जो काया, वाणी तथा मन से संयमित हैं। वे कहते हैं कि -

कायेन संबुता धीरा अथो वाचाय संबता,

मनसा संबुता धीरा ते वे सुपरिसंबता ।

यानी जो धीर पुरुष काय से संयत, वाणी से संयत और मन से संयत रहते हैं, वह ही पूर्ण रूप से संयत हैं। इस संयम भाव को दैनिक व्यवहार में सम्मिलित करने की प्रेरणा वे दूसरे तरीके से देते हुए राष्ट्र-अनुभूति में लिखते हैं कि जीवन एक संघर्ष नहीं है, वह उत्सव है, जिसमें अनेक प्रकार के रंग होते हैं। मानव का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक रंग के साथ सामंजस्य पैदा करे तथा हर परिस्थिति में सकारात्मक चिंतन तथा व्यवहार करे। इससे स्वयं का ही नहीं, अन्य का जीवन भी हर्षित तथा सुरभित होगा। इसी संदर्भ में नीचे प्रसन्नता वाचक मानवीय व्यवहार अथवा गुण वर्णित है। यदि हम इन्हें अपने जीवन में उतारते हैं तो स्वयं तो प्रसन्न रहेंगे ही, हमारे कारण हमारे संपर्क में आने वाले सभी लोग प्रसन्न रहेंगे।

तथागत बुद्ध ने अपने उपदेशों में कुशल कर्म को सर्वाधिक उच्च स्तर पर रखा है। उन्होंने माता विशाखा को उपदेश देते हुए कहा कि -

यथापि पुष्कारसिंहा कयिरा मालागुणे बहू,

एवं जातेन मच्चेन, कत्तबं कुसलं बहुं।

यानी जैसे कुशल माली फूलों को गूँथ कर माला बनाता है, ऐसे ही लोक में मनुष्य को कुशल कर्म करना चाहिए। तथागत ने दान की भावना जाग्रत करने के लिए बहुत सुंदर उपमा दी है। फूल हों, लेकिन माली कुशल ने हो, यानी धन-सम्पदा हो लेकिन दान की इच्छा न हो, चेतना न हो, तो कुशल कर्मों की माला नहीं बन सकती। कुशल कर्म को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है? इसको उन्होंने अपनी आत्मकथा के तीसरे भाग में स्पष्ट किया है। डॉ. अतुल कृष्ण ने परमार्थ सेवा का ही अपने जीवन का महान ध्येय माना है। वे लिखते हैं कि मैं यह भी स्पष्ट कर दूँ कि मैंने कभी केवल स्वयं की उन्नति को ही अपना जीवन-ध्येय स्वीकार नहीं किया। मेरे सामने मेरा पूरा समाज, राष्ट्र तथा वंचित वर्ग था। इनके लिए कुछ कर सकूँ, यह भी मेरे जीवन-लक्ष्य का एक परम लक्ष्य था। मैंने अनुभव किया कि जातिवाद भारतीय समाज को ऊर्जाहीन तथा तेजविहीन कर रहा है। इसे दूर करने की दिशा में मैंने प्रयास भी किए। जातिवाद समाप्त करने का प्रयास बहुत सफल नहीं रहा। इस संदर्भ में डॉ. अतुल कृष्ण लिखते हैं कि उन्होंने बौद्ध मत को अंगीकार किया।

कुशल कर्म की परिभाषा शोध लक्षित साहित्यकार की दृष्टि में बहुत व्यापक है। वह कर्म भी कुशल कर्म है जो देश के विकास तथा सुरक्षा में भूमिका अदा करे। भारत की स्वतंत्रता तथा भारतीयता की रक्षा के लिए जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी, वे भी कुशलकर्म हैं। इस नाते वे प्रत्येक उस व्यक्ति को आदरणीय मानते हैं जिन्होंने भारत-राष्ट्र के गौरव को सुरक्षित रखने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

समाज में घृणा, कटुता, वैषम्य तथा शत्रुता भाव का अंत कभी नकारात्मक सोच तथा व्यवहार से नहीं हो सकता। इसके लिए व्यक्ति को अपने भीतर सकारात्मक सोच विकसित करनी होगी। तथागत बुद्ध कहते हैं कि -



न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं,

अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।

अर्थात् यहां वैर से वैर शांत नहीं होते, अवैर से शांत होते हैं, यही तो सनातन धर्म है। तथागत के इस उपदेश को डॉ. अतुल कृष्ण वर्तमान संघर्षमय विश्व के लिए उपयोगी सूत्र मानते हैं। वे लिखते हैं कि तथागत ने सनातन धर्म को परिभाषित करते हुए कहा कि वैर से वैर शांत नहीं होता, अवैर से ही वैर को शांत किया जा सकता है। यह वाक्य लघु अवश्य है लेकिन इसके भीतर सम्पूर्ण जीवन दर्शन है। इस कथन के माध्यम से, वे इस सत्य को स्थापित करना चाहते हैं कि सकारात्मक दृष्टि सृष्टि में शांति, सहयोग, विकास तथा उच्च जीवन मूल्यों के लिए आवश्यक है। वैर की भावना नकारात्मक दृष्टि है जो हमें तनावमय करती है और हमारी सृजनात्मक क्षमताओं को बाधित करती है। नकारात्मक सोच का व्यक्ति न तो स्वयं के लिए न ही समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। जीवन में नव-सृजन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है। इसकी उत्पत्ति तब ही होती है, जब हमारी अंतर्जगत में किसी के प्रति कुंठा, आक्रोश, क्लेश और हिंसात्मक भाव न हों, ये सब दोष वैर-भाव के कारण उत्पन्न होते हैं। इस भाव को वे दूसरे तरीके से अपनी आत्मकथा के प्रथम भाग में कहते हैं कि आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति से बाहर आकर समाज सेवा में भी अपनी भूमिका निश्चित करें। किसी पीड़ित व्यक्ति को देखकर निश्चित ही अंतर्मन द्रवित हो जाना चाहिए। जब तक आपकी संवेदनाएं जाग्रत नहीं होंगी, समाज सेवा के लिए आप प्रेरित भी नहीं होंगे। अतः संवेदनशील बनें और सबको सम्मान देना सीखें।

तथागत का संदेश है कि अपने सुख के लिए दूसरों को दुख मत हो, दूसरे के दुख पर प्रसन्न भी नहीं होना चाहिए। हम सभी के सुख की कामना करें। इस संदर्भ में शाक्य मुनि कहते हैं कि परदुक्खू पदानेन यो अत्तनो सुखमिच्छति, वेरससंग्ग संसट्ठी वेरा सो न पमुच्चति। अर्थात् दूसरे को दुख देकर जो अपने लिए सुख चाहता है, वह वैर के संसर्ग में व्यक्ति वैर से नहीं छूटता। इसी भाव को प्रयोग उन्होंने साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने के लिए किया। उनका कहना है कि समाज का एक्य भाव तथा समरसता का विकास विष्वास अर्जित करने की हो सकता है। भारतीय संस्कृति और साहित्य के साथ बौद्ध चिंतन का गहरा तथा अनवरत संबंध रहा है। बौद्ध चिंतन में निहित समता, सहिष्णुता, करुणा, उदारता, तथा समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति के रूप में प्रकट होती है। बौद्ध मत का तर्कवाद तथा मानव मूल्यों के प्रति परम आस्था, भारतीय साहित्य के प्रेरक बल बनें। जहां तक डॉ. अतुल कृष्ण द्वारा विरचित साहित्य का प्रश्न है, उसमें वैचारिक गहनता, करुणा, समरसता भाव, आत्म-जागरूकता, सामाजिक न्याय तथा लोक-मंगल के सामूहिक प्रयास आदि सकारात्मक तत्व हैं जो बौद्ध दर्शन की मूल चेतना है। डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य को हम चार भागों विभक्त कर सकते हैं- कथात्मक साहित्य, विचार प्रधान साहित्य, परिचायात्मक साहित्य और आत्म-अभिव्यक्ति साहित्य। कथात्मक साहित्य में उनका एक उपन्यास तथा दो कहानी संग्रह हैं। कथात्मक साहित्य में बौद्ध चिंतन के आत्म-जागरूकता तथा व्यक्तिगत विकास से सामूहिक विकास की भावना परिलक्षित होती है। उसमें सामाजिक समस्या है तो उनका निदान भी है। बौद्ध मत की मूलभूत शिक्षा परस्पर निर्भरता और सहयोग की अवधारणा है, जो सामाजिक न्याय का मुख्य सूत्र है, वह उनके उपन्यास तथा कहानियों में सर्वत्र लिखाई देती है। विचार-प्रधान साहित्य पूर्ण बौद्ध चिंतन का प्रतिनिधित्व करता है। वे मानते हैं कि यदि तथागत के सिद्धांतों को स्वीकार किया जाता है जो मानव जाति विविध प्रकार से क्लेशों, संघर्शों तथा विकारों से मुक्त हो सकती हैं। इसके विचार-प्रधान साहित्य में साप्ताहिक प्रभात में प्रकाशित होने वाले उनके आलेख तथा राष्ट्र-अनुभूति पुस्तक है। परिचायात्मक साहित्य में वे उत्तराखंड के क्रांतिकारियों पर लेखन करते हैं। उस पुस्तक का मूल ध्येय कुशल कर्म को सम्मानित करना है। उनका आत्म-अभिव्यक्ति साहित्य चार भागों में प्रकाशित है, वह उनकी आत्म-कथा है। इसको मात्र आत्म-कथा के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह एक विचार यात्रा भी है, साथ ही संघर्ष का अभिलेख भी है। यह साहित्य व्यक्ति को आत्म-विश्वास तथा कर्मशीलता की प्रेरणा देता है, साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि यदि का जीवन आत्म-पोषण के लिए नहीं होता, उसका सामाजिक महत्व भी है। बौद्ध दर्शन भी व्यष्टि से समष्टि की बात करता है। कुल मिलाकर डॉ. अतुल कृष्ण का साहित्य पूर्णतः बौद्ध चिंतन की ही एक भावनात्मक तथा वैचारिक अभिव्यक्ति है।

संदर्भ ग्रंथ

1. साप्ताहिक प्रभात अंक 10 अप्रैल, 2022
2. शिखर संस्करण 2007 सम्पादक- सरदार अहमद
3. साप्ताहिक प्रभात अंक 20 अक्टूबर, 2024
4. धम्म पद बाल वर्ग
5. भविष्य का वैज्ञानिक धर्म बौद्ध धम्म होगा- आरके सिंह संस्करण 2018 प्रकाशन सम्यक प्रकाशन, दिल्ली



6. आधारशिला -डॉ. अतुल कृष्ण संस्करण 2010, प्रकाशन सुभारती मीडिया, मेरठ में संकलित कहानी नारी
7. साप्ताहिक प्रभात अंक 25 अगस्त, 2024
8. बुद्ध धम्म और वैज्ञानिकता- राजेश चंद्रा प्रकाशन - अनन्य प्रकाशन, दिल्ली संस्करण- 2022
9. उन्नति के पथ पर-डॉ. अतुल कृष्ण संस्करण - सन 2007
10. जीवन तरंगिणी भाग दो -डॉ. अतुल कृष्ण संस्करण-2025 प्रकाशन विद्या मंदिर प्रकाशन, मेरठ
11. धम्मपद क्रोध वर्ग
12. उत्तराखंड के क्रांतिकारी- डॉ. अतुल कृष्ण संस्करण- 2025, प्रकाशन- वत्स मीडिया एंड पब्लिशिंग हाऊस, मुजफ्फरनगर
13. धम्म पद, यमक वर्ग
14. साप्ताहिक प्रभात अंक 20 अक्टूबर, 2024
15. धम्म पद, प्रकीर्ण वर्ग
16. जीवन तरंगिणी भाग एक डॉ. अतुल कृष्ण संस्करण-2025 प्रकाशन-शिवांक प्रकाशन, दिल्ली